कृत्रिम मेधा और भारतीय समाज: चुनौती और समाधान

डॉ. गोपीराम शर्मा, सह आचार्य, हिंदी विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

Abstract

भारतीय समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनुशासन तय कर दिया गया है। इसी को धर्म कहा गया है। धर्म कर्तव्य का दूसरा नाम है। वैदिक काल से ही व्यक्ति को अपना धर्माचरण आवश्यक है। धर्म किसी पूजा पाठ या उपासना विधि का नाम नहीं है।

भूमंडलीकरण के दौर में विश्व आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता की ओर बढ़ चला है। विश्व का लक्ष्य विकसित होना है। यहां विकसित होना आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति से संबंधित है। भारत में कभी भी आर्थिक लक्ष्य महत्त्वपूर्ण नहीं रहे। पैसा पूंजी को यहां के ऋषियों ने गौण मानकर छोड़ दिया। यहां मेधा को महत्व दिया गया है। ज्ञान को पूज्य माना गया है। जिस विद् धातु से वेद बने हैं वह ज्ञान का ही पर्याय है। ऐसे में कृत्रिम मेधा जो सामने आ रही है वह बिना प्रयास और बिना त्याग तपस्या से अर्जित हो रही है। इसमें कृत्रिम मेधा का उपयोग आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति ही अधिक है। ऐसे में इसमें पवित्रता नैतिकता कितनी रह जाएगी, यह संदिग्ध है?

कृत्रिम मेधा विज्ञान के आविष्कार की तरह है जो लाभ पहुंचाने के स्थान पर नुकसान भी कर सकती है। विज्ञान के बड़े आविष्कार सुरक्षित हाथों में ही रखे जाते हैं। कृत्रिम मेधा का उपयोग सहज उपलब्ध होने लगा है। इससे कहा जा सकता है कि कृत्रिम मेधा के दुरुपयोग की आशंका अधिक है। भारत जैसे देश में इसकी चुनौतियां अधिक सामने आने वाली है।

भारत में मेधा की कभी कोई कमी नहीं रही। भारत ने अपने ज्ञान विज्ञान का लोहा सदा मनवाया है। वह बहुत लंबे समय तक विश्व गुरु के पद पर आसीन रहा है। आज के समय जब विश्व बहुत से मोर्चो पर चुनौतियों से घिरा हुआ है, वह भारत की ओर ही देख रहा है। भारत एक साधना स्थली रही है। इसी कारण यहां की संतति मेधावी होती आई है। हमको इसी मेधा विकास करना होगा। यदि हम नैसर्गिक मेधा का विकास करने में आगे रहे तो कृत्रिम मेधा की दुश्वारियों से बच सकेंगे।